नारियल की छड़ी से जमीन के अन्दर पानी का पता लगाने की तकनीक

499. **डा० बापू कालदाते** : क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि नारियल की छड़ी से जमीन के अन्दर पानी की जानकारी देने वाल प्रसिद्ध प्राचीन भारतीय वैज्ञानिक, वाटरमीटर की तकनीक वैज्ञानिक वाराह मिहिर की तकनीक वैज्ञानिक सिद्ध हुई है ;

(ख) क्या सरकार ने इस तकनीक का अध्ययन करने के लिए कोई कार्यवाही की है ताकि सूखे से प्रभावित ग्रामीण क्षेत्रों में इसका प्रयोग किया जा सके ;

(ग) यदि हां, तो उसका ब्यौरा क्या है; और

(घ) यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं ?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री अरविन्द नेताम) : (क) जी, नहीं ।

(ख) नहीं ।

(ग) प्रश्न ही नहीं उठता ।

(घ) जमीन से पानी निकालने के लिए पायंटर के रूप में नारियल की छड़ी, टहनी, धातु की डंडी या तार के टुकड़े को उपयोग करने की जो अभिधारणा वाराह मिहिर और अन्य व्यवासयियों की थी, उसकी व्याख्या भौतिक नियमों से नहीं हो सकती इसलिए न तो इनका कोई वैज्ञानिक आधार है और न ही कभी इसकी वैज्ञानिक जांच की गई है। यह अभिधारणा एक पुस्तक "वाटर विचिंग य०एस० ए०" जिसके लेखक ई० जेड० वोग्ट और रे-हैमन हैं और जो शिकागो विश्वविद्यालय प्रस 1972 द्वारा प्रकाशित की गई थी, में व्यक्त की गई थी । इस प्रविधि पर विस्तार से विचार किया गया और यह निष्कर्ष निकाला गया :

"वशीकरण के द्वारा जमीन के अन्दर से पानी निकालने की तकनीक एक विश्वसनीय अनुभव सिद्ध तकनीक की तरह कार्य नहीं कर सकी है । पानी निकालने की इस तरह की तकनीकों की वैज्ञानिक मानकों के अनुरूप पुष्टि नहीं हो पाई है इसलिए ये अब अस्तित्व में नहीं हैं ।

Prices of Milk and Milk Products

500. DR. BAPU KALDATE: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

(a) whether the FAO has reported that deregulation of the Indian Dairy Industry in 1991 has led to diversion of milk supplies from the co-operative sector to the private sector leading to higher proced processed products;

(b) if so, what are other details of the report; and

(c) what steps are proposed to be taken to reduce the prices of milk and milk products?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ARVIND NETAM): (a) to (c): Food and Agricultural Organisation of the United Nation in its publication "FOOD OUTLOOK" (No. 12, December, 1992), while reviewing the global situation of milk and milk products has, among other things, reported: "In India, the largest producer among developing countries, a 4 percent expansion in output is anticipated for 1992, assisted by improved pasture and fodder supplies. Following the deregulation of the Indian Dairy Industry in 1991, some milk supplies were diverted from the co-operative processing sector, which supplies low-priced fresh milk, to the private dairies producing higher-priced processed products. This situation has been aggravated by the increased amounts of milk being retained at the village level for the production of ghee following a price rise for that commodity. In mid—1992, the registration of medium to large dairies was re-introduced, which will